गिरिडीह जिला के जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास का एक भौगोलिक विश्लेषण

शोध प्रारूप

पीएच डी उपाधि हेतु !

2023

विश्वविद्यालय, भूगोल विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

रांची विश्वविद्यालय, रांची

शोध निर्देशक

डॉ. सुरभी साहू

विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग

रांची विमेन्स कॉलेज, रांची

शोधकर्ता

आसित दिवाकर

एम.ए. , यूं.जी.सी – नेट (जे.आर.एफ)

रांची विश्वविद्यालय, रांची.

शोधकर्ता का नाम एवं पता (वर्तमान और स्थाई पता)

असित दिवाकर
शोधार्थी
रांची विश्वविद्यालय, रांची
वर्तमान पता / स्थाई पता
असित दिवाकर
पिता- दु:खहरण मंडल
ग्राम बासोकांडो
पोस्ट – चालमो बरहमसिया
थाना- डुमरी
जिला- गिरिडीह
राज्य- झारखंड
पिन कोड- 825167
ईमेल – asitdiwakar@gmail.com
मो. न.- 7979757832

शोध निर्देशक -

डॉ. सुरभी साहू
विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग
रांची विमेन्स कॉलेज, रांची
मो. न. - 82106 48782

1. शोध शीर्षक

गिरिडीह जिला के जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास का एक भौगोलिक विश्लेषण

2. शोध विषय का संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुत शोध कार्य में झारखंड राज्य के उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के गिरिडीह जिला के जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असंतुलन तथा इस असंतुलन के कारण जनजातियों के समग्र विकास को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है इसका अध्ययन करना तथा वर्तमान समय के परिपेक्ष्य में उनकी आवश्यकताओं का अध्ययन तथा विश्लेषण करके जनजातियों के लिए नवीन अवसर की खोज, इस शोध कार्य का मुख्य आधार है। इस शोध में जनजातियों कि विकास में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक गतिविधियों तथा क्षेत्रीय समस्याओं के प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण कर कमियों का खोज करना है। इस शोध के द्वारा जनजातियों के सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक गतिविधियों को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाया जाएगा तथा वे आपस में किस प्रकार एक दूसरे को प्रभावित करते हैं इसका विश्लेषण कर जनजातियों के विकास में आने वाले परिवर्तनों का पता लगाया जाएगा। इस शोध कार्य में जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास में क्षेत्रीय समस्याओं का अध्ययन कर उन समस्याओं के समाधान हेतु नवीन ज्ञान का विकास किया जाएगा जिससे जनजातियों के समक्ष भविष्य में आने वाले सामाजिक आर्थिक विकास की संभावनाओं को पता लगाया जा सकेगा। केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं के विफलताओं के कारणों का भौगोलिक विश्लेषण कर नवीन उपायों का खोज किया जाएगा। इस शोध में जनजातियों के विकास का विश्लेषण भौगोलिक तथ्यों के आधार पर किया जाएगा।

3. अद्यतन स्थिति

सामाजिक-आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असंतुलन जनजातियों के समग्र विकास की प्रमुख समस्या है। क्षेत्रीय असंतुलन का अर्थ विभिन्न क्षेत्रों के बीच प्रति व्यक्ति आय, साक्षरता दर, स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं, औद्योगिकरण के स्तर, बुनियादी सुविधाओं आदि में व्यापक अंतर है। क्षेत्र या तो राज्य या राज्य के भीतर का क्षेत्र हो सकते हैं। क्षेत्रीय विषमताओं के प्रमुख कारकों में ऐतिहासिक कारक, भौगोलिक कारक, आर्थिक कारक, राजनीतिक कारक एवं जागरूकता की कमी है।

भारत में आमतौर पर आदिवासी जनजातियों को देश का मूल निवासी माना जाता है। झारखंड की प्राचीन जनजातियों का सामाजिक जीवन अत्यंत सरल और सदा रहा है। प्राचीनकाल में जनजातियों का सामाजिक ढांचा आदिम युग वाला था। पूर्णरूपेण वनोउत्पादों, आखेट और पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित यह समाज कालांतर में नई संस्कृतियों से प्रभावित हुआ है। बाहरी लोगों के सतत आगमन ने मूल जनजातीय सामाजिकता और सांस्कृतिक जीवन में अनेक परिवर्तन किया। ईसाइयों के आगमन ने इस जनजातीय समाज को अशिक्षा के अंधकार से निकाल कर शिक्षा और व्यवहार के लोक में लाने में अग्रणी भूमिका

निभाई परंतु इसके साथ यहां के जनजातीय लोग अपने ही सामाज एवं सांस्कृतक मूल्यों को दूर छोड़ते चले जा रहे हैं।

डॉ. जयंत प्रताप सिंह ने अपने शोध पत्र "**अनुसूचित जातियों के सामाजिक आर्थिक विकास का भौगोलिक विश्लेषण (जनपद जालौन उ. प्रदेश)"** में अनुसूचित जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास में आने वाले समस्याओं का उल्लेख किया है।

डॉ. हलदर यादव ने अपने शोध पत्र **"अनुसूचित जाति एवं जनजातियों की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन में अनुसूचित जातियां की सामाजिक आर्थिक विकास"** में जनजातियों के विकास में शिक्षा को प्रमुख साधन माना है।

डॉ. रीना कुमारी ने अपने शोध पत्र **"झारखंड की आदिम जनजातियों की आर्थिक सामाजिक दशाएं तथा नूतन परिवर्तन : एक भौगोलिक अध्ययन"** में झारखंड के जनजातीय समुदाय के सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों को एक दूसरे से परस्पर संबंधित माना है।

डॉ. बैजनाथ रजवार ने अपने शोध पत्र **"झारखंड क्षेत्र की जनजातीय जनसंख्या के भौगोलिक आयाम"** में झारखंड की जनजातियों के क्षेत्रीय वितरण को बतलाया है, जिसमें जनजातियों के असमान वितरण को बतलाया है।

डॉ श्रुति कुजुर ने अपने शोध पत्र **"रांची नगर स्थित पूर्ववर्ती जनजातिय ग्रामों में सामाजिक आर्थिक प्रतिरूप के बदलते स्वरूप एक भौगोलिक अध्ययन"** में जनजातियों के बदलते सामाजिक आर्थिक स्वरूप का मुख्य आधार जनजातियों के आर्थिक क्रियाकलाप को माना है।

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए झारखंड राज्य के उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल के गिरिडीह जिले का चयन किया गया है। वर्ष 1972 में मौजूदा हजारीबाग जिले से गिरिडीह जिले के रूप में अलग जिला बनाया गया है। गिरिडीह का शाब्दिक अर्थ गिरि अर्थात पहाड़ियां और डीह या दीह स्थानीय खोरठा बोली का एक शब्द है जिसका अर्थ भूमि होता है। इसका क्षेत्रफल 4853.56 वर्ग किलोमीटर है। जिसका अक्षांशीय विस्तार 24°28'41" उत्तर(N) तथा देशांतरीय विस्तार 86°09'37" पूर्व (E) है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहां की कुल जनसंख्या 24,45,474 है जो तीसरा सबसे अधिक आबादी वाला जिला है। जिसमें अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या कुल जनसंख्या का 9.74% है तथा यहां की जनजातीय साक्षरता दर 46.06 % एवं जनजातीय लिंगानुपात 974 है।

जनजाति या आदिवासी शब्द का विन्यास आदि अर्थात पुरातन तथा वासी अर्थात रहने वाला (निवासी) के रूप में माना जाता है। इन जनजातियों को अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न नामों से भी जाना जाता है जैसे

वन्य जाति, वनीय जाति, वनवासी, वनों के आश्रम में रहने वाले पहाड़ी लोग, आदिम जाति तथा कई स्थानीय नामों से भी जाना जाता है। इसकी समस्त क्रियाएं आदिम श्रेणी की होने के कारण आर्थिक क्रियाएं भी प्राथमिक क्रियाकलाप तक ही सीमित है। जिसका प्रभाव खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा इत्यादि पर प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होता है, जो अन्य समुदाय से भिन्न है।

झारखंड राज्य खनिज संपदा में धनी राज्य है, इसलिए इसे भारत का रूर प्रदेश के नाम से जाना जाता है। इसके बावजूद यहां के आदिवासी एवं जनजातीय समाज अन्य जातियों की अपेक्षा पिछड़ी अवस्था में है। यह क्षेत्र संसाधन की दृष्टि से धनी है, परंतु यहां की क्षेत्रीय विकास आज भी उतना नहीं हो पाया है जितना होना चाहिए। इसी प्रकार झारखंड राज्य के गिरिडीह जिले में भिन्न-भिन्न प्रकार के खनिज संपदा उपलब्ध है जिस पर यहां के लोग आसपास के स्थापित उद्योगों में काम कर रोजगार प्राप्त करते हैं, परंतु कुछ क्षेत्रों में जहां बड़े-बड़े उद्योग की स्थापना ना होने के कारण या फिर किसी कारणवश उद्योगों के बंद हो जाने के कारण ग्रामीणों के बड़े शहरों या फिर दूसरे राज्यों में रोजगार के लिए पलायन करना पड़ता है या बड़े बड़े उद्योगों में कौशल एवं उच्च शिक्षा के कमी के कारणवश उच्च पदों से वंचित रह जाते हैं। इस प्रकार के ज्यादातर लोग जनजाति समुदाय है, इसके बावजूद इन लोगॊं का छोटे-छोटे कुटीर उद्योग एवं वन उत्पादन संग्रह जैसे लाह, जड़ी बूटी, तसर एवं केंदूपत्ते के उत्पादन द्वारा राज्य के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। वर्तमान अध्ययन में यह देखा गया है कि गिरिडीह जिले में आदिवासियों और गैर आदिवासियों की सामाजिक आर्थिक स्थितियों में व्यापक अंतर आया है।

साक्षरता, गैर कृषि श्रमिकों, शहरी आबादी, गैर श्रमिक और आवास जैसे विकास के लगभग सभी संकेतको में आदिवासी बहुत पीछे हैं। इसका मुख्य कारण मजबूत तंत्र की आवश्यकता लघु तथा वनोपजो की खरीद के मामले में राज्यों को अभी और मजबूत तंत्र बनाने की जरूरत है। इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन की एक रिपोर्ट में पाया गया है कि खरीद केंद्रों की स्थापना में देरी होती है और स्कीम के बारे में जागरूकता का अभाव है साथ ही लघु वनोपजों के विविध उपयोग के लिए उन पर अनुसंधान और विकास की भी जरूरत है। इसके साथ साथ सरकार द्वारा वन क्षेत्रों हेतु पारित नवीन कानून व्यवस्था आदिवासियों की आजीविका को प्रभावित किया है।

यहां की कृषि मानसून आधारित होने के कारण कृषि क्षेत्र में विकास का अभाव देखा जाता है इसके बावजूद आदिवासी समुदाय के लगभग 90% जनसंख्या कृषि पर आश्रित है। यहां की कृषि मानसून आधारित होने के कारण मानसून के बाद यहां के लोग कुटीर ग्रामीण उद्योग तथा वन उत्पाद संग्रह से अपनी जीविका चलाते हैं। इसके साथ गिरिडीह जिले की भूमि कोयले से समृद्ध है और एक बार गिरिडीह में अभ्रक उद्योग का विकास हुआ था, जो मुख्य रूप से जापान और यूएसएसआर को निर्यात किया जाता था गिरिडीह जिले के विशेष रूप से दक्षिणी भाग में कोयले की कई छोटी-बड़ी खदानें पाई जाती है, जो वर्तमान समय में जनजातियों के आजीविका का एक अन्य साधनों में से एक है। गिरिडीह जिले में खनिज संसाधन के साथ-साथ पर्यटन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रमुख पर्यटन स्थलों में से पारसनाथ पहाड़ विश्वविख्यात है। जो जैन धर्म तथा आदिवासियों का एक धार्मिक स्थल है। इसके साथ साथ यह क्षेत्र पारसनाथ वन्य जीव अभ्यारण के अंतर्गत आता है इस जिले के अन्य पर्यटन स्थलों में खंडोली, हर-हर धाम, झारखंडी धाम और उसरी जलप्रपात शामिल है जो स्थानीय लोगों तथा

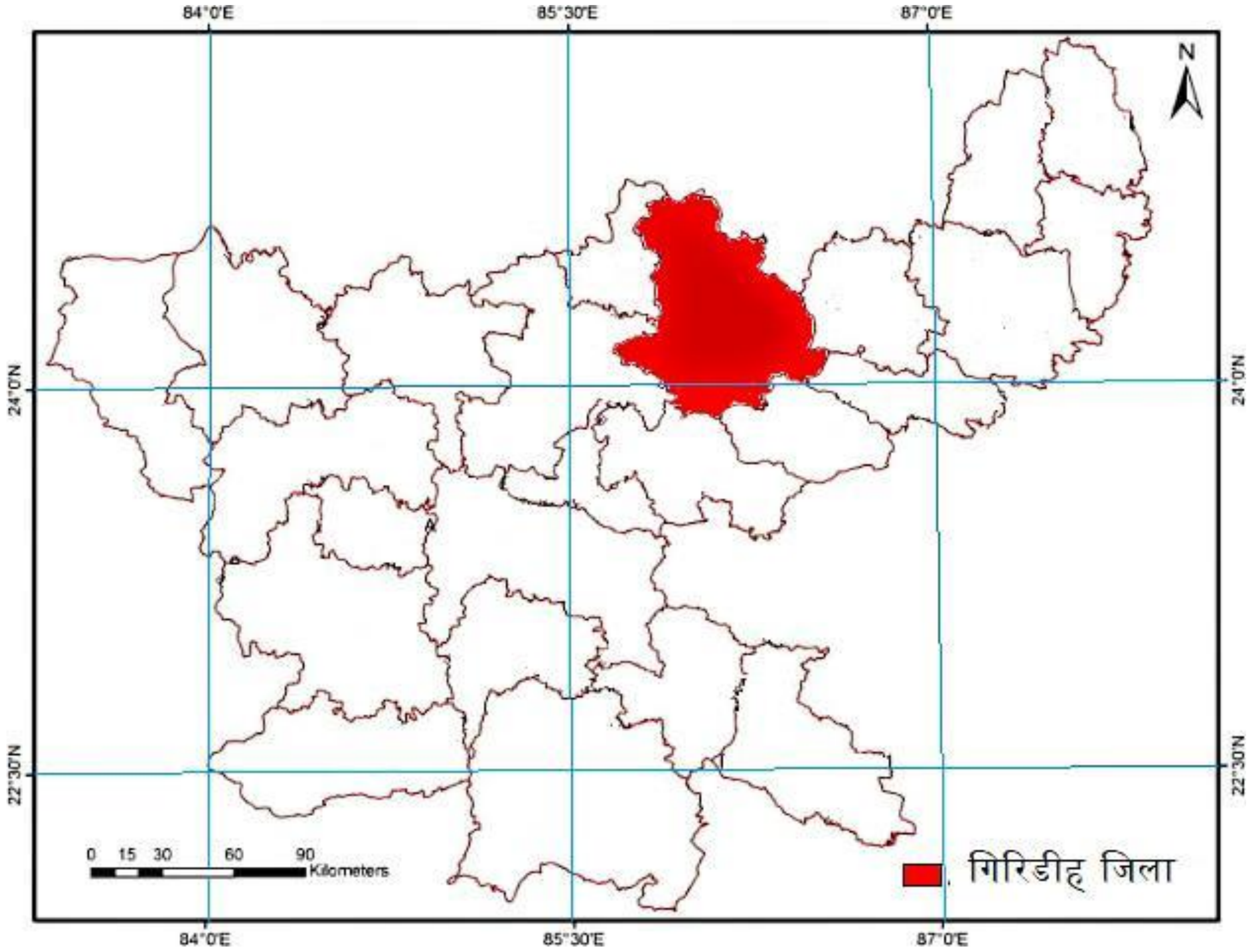

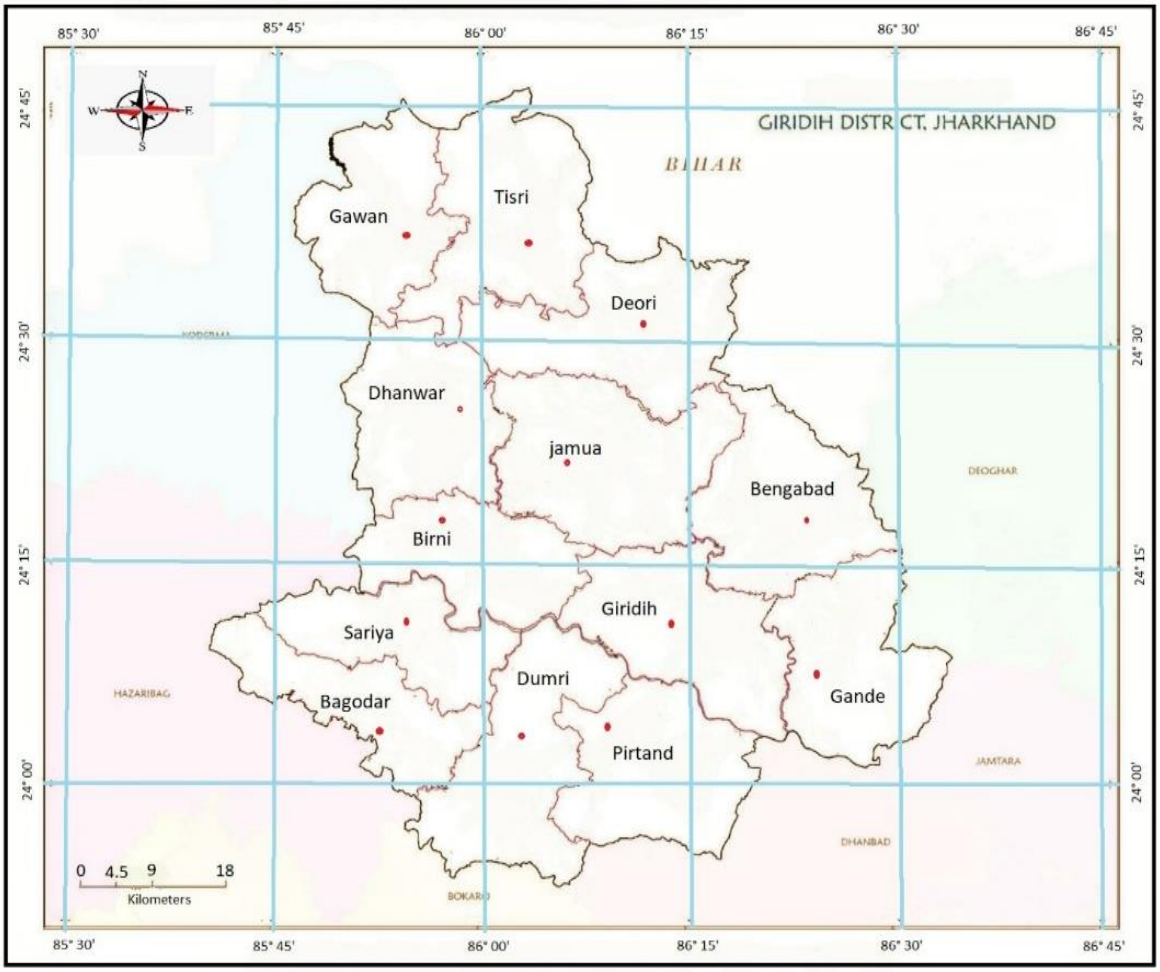

आदिवासियों को आजीविका प्रदान करने में मदद करता है। इन सभी गतिविधियों के द्वारा भारत के जीडीपी के विकास में इस समुदाय का विशेष योगदान है।

वर्तमान समय में आदिवासियों के सामाजिक आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण बाधा अशिक्षा, बाहरी लोगों की हस्तक्षेप, नक्सल, राजनीतिक अस्थिरता एवं जागरूकता की कमी है जो इस समुदाय के अस्तित्व के लिए खतरा है। अपने भरण पोषण के लिए नवीन रोजगार के कारण यह समुदाय अपने मातृभूमि एवं संस्कृति से अलग होते जा रहे हैं। इसके लिए सरकार द्वारा अलग-अलग नीतियों का निर्माण किया जाता रहा है इसके बावजूद अन्य समुदायों की अपेक्षा जनजातीय समुदायों में सामाजिक आर्थिक विषमता अधिक है।

मैंने अध्ययन के लिए गिरिडीह जिला का चयन इसलिए किया है क्योंकि इस क्षेत्र में झारखंड के लगभग सभी जनजातियां पाई जाती है। इस क्षेत्र में सामाजिक विविधता के साथ-साथ यहां की सांस्कृतिक एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है। क्षेत्रीय विकास के लिए यहां के जनजातियां स्वावलंबी होने पर ही

विकसित हो सकते हैं। मेरे चयनित अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के सामाजिक आर्थिक विकास की संभावनाओं का अध्ययन, शोधकर्ता, प्रशासनिक एवं उद्योग बोर्ड के लिए उपयोगी होगा।

4. अनुसंधान (जाँच) की जाने वाली समस्या

अध्ययन किए जाने वाले विषय को शोध समस्या कहा जाता है। अध्ययन के विषय के अनुसार शोध समस्याएं अलग-अलग होती है तथा यह समस्याएं प्रश्नों के रूप में होती है। मानव भूगोल के अंतर्गत जनजातियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति से संबंधित तथ्यों के पूर्णनिरीक्षण एवं उपलब्ध साहित्य की समीक्षा के आधार पर प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नलिखित समस्याएं हैं।

- अध्ययन के क्षेत्र में सामाजिक आर्थिक विकास में जनजातियों के समक्ष आने वाली समस्याएं क्या-क्या है ?
- गिरिडीह जिले में जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विषमताओं के कौन कौन से कारक हैं ?
- अध्ययन क्षेत्र की सामाजिक संरचना और जनांकिकीय स्वरूप क्या है ?
- गिरिडीह जिले की जनजातियों में सामाजिक और आर्थिक गतिविधियां किस प्रकार एक दूसरे को प्रभावित करता है ?
- अध्ययन क्षेत्र की जनजातियां भारतीय समाज से किस प्रकार संबंधित हैं ?
- अध्ययन क्षेत्र में जनजातियों की सामाजिक आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका क्या है ?
- अध्ययन क्षेत्र में जनजातियों की सामाजिक आर्थिक विकास में सरकारी योजनाओं से किस प्रकार लाभान्वित है ?

5. अनुसंधान और प्रेरणा के उद्देश्य

प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से शोध कार्य का उद्देश्य शिक्षा विस्तार, मानव कल्याण, शिक्षा जन जागरूकता के नवीन प्रवृत्ति के खोज के लिए होता है। इसका अर्थ अज्ञात तथ्यों को शोध के माध्यम से पता लगाना है जिससे नवीन तथ्यों को बाहर लाना तथा मनुष्य के ज्ञान में वृद्धि करना, आगामी घटनाओं की भविष्यवाणी करने हेतु सामान्य नियमों का विकास, शोध के माध्यम से किया जाना है ताकि भविष्य में सटीकता लाया जा सके तथा शोध का उद्देश्य समस्या के उत्पन्न होने पर उसके समाधान की खोज करना है। इसके मूल्यांकन व अनुसरण द्वारा मानव को लाभ पहुंचाया जा सकता है और हमारे इस शोध द्वारा जनजातियों के बारे में नई-नई जानकारी प्राप्त होगी। प्रस्तुत शोध कार्य की निम्नलिखित उद्देश्य है।

- अध्ययन क्षेत्र में जनजातियों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का अध्ययन करना।
- जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास में क्षेत्रीय समस्याओं का अध्ययन करना तथा उन समस्याओं के समाधान हेतु नवीन ज्ञान का विकास करना।
- जनजातियों की सामाजिक आर्थिक विकास के गतिविधियों के कारक के तत्वों का पता लगाना।
- जनजातियों की सामाजिक आर्थिक विषमताओं को दूर कैसे किया जाए उसके बारे में पता लगाकर उसके समाधान हेतु उपायों का विकास करना।
- जनजातियों के समक्ष भविष्य में आने वाली सामाजिक आर्थिक विकास की संभावनाओं का अध्ययन करना।
- जनजातियों के विकास हेतु भविष्य में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना ।

6. शोध परिकल्पना या अनुसंधान प्रश्न

परिकल्पना शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करके उपयुक्त परिकल्पना का निर्माण होता है। परिकल्पना अवलोकन एवं प्रयोग की ओर नए कदम के लिए अग्रसर होने को प्रेरित करती है। इस प्रकार परिकल्पना उपलब्ध तथ्यों के आलोक में नई संभावनाओं की ओर देखने का सामर्थ्य प्रदान करती है। शोध के लिए इस विषय का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि झारखंड राज्य में गिरिडीह जिला औद्योगीकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है इसके साथ वन और खनिज संसाधनों के अच्छे भंडार की उपस्थिति के कारण मध्यम और बड़े पैमाने पर उद्योग स्थापित करने के लिए एक उपयुक्त क्षेत्र है। गिरिडीह की आबादी के एक बड़े हिस्से को औद्योगिक एवं खनन इकाइयां रोजगार के अवसर प्रदान करते हैं। यहां मौजूदा ग्रामीण उद्योग जैसे हैंडलूम, हस्तशिल्प, खादी, वस्त्र इत्यादि को आजीविका देने के लिए भी बढ़ावा दिया जा रहा है और इसे विकसित किया जा रहा है। जनजातीय आबादी जिला प्रशासन उद्योगों को आधुनिकीकरण / तकनीकी उन्नयन के मामले में मदद करता है, जो आवश्यक सामान्य सुविधाएं, उत्पाद डिजाइन, विपणन सहायता इत्यादि प्रदान करता है ताकि उन्हें विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा सके। गिरिडीह से कुछ प्रमुख निर्यात योग्य वस्तुओं लौह धातु, उपकरण, वन उत्पादन , खनिज, मिट्टी के बरतन, और परामर्श सेवाएं हैं।

- गिरिडीह जिला में जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक विकास की अच्छी संभावनाएं है।
- जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक परिस्थिति में बदलाव आया है तथा सामाजिक आर्थिक समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ी है।
- जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विषमताओं के अनेक कारण है ।
- शिक्षा द्वारा जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास को बेहतर बनाने की अपार संभावनाएं हैं।

- सरकारी योजनाओं में जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास की अनेक संभावनाएं निहित हैं।

7. अनुसंधान की रुपरेखा (अभिकल्प) तथा पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण विधि तंत्र को अपनाया जाएगा । भौगोलिक प्रसंगों की तुलनात्मक व्याख्या हेतु भौगोलिक साहित्य के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक व धार्मिक साहित्य से जुड़ी हुई रचनाओं की भी सहायता ली गई है और ली जाएगी।

शोध के लिए सूचना का प्रमुख स्रोत सरकारी दस्तावेज, समाचार पत्र, झारखंड जनजातीय विभाग, सूचना केंद्र, झारखंड के सामाजिक आर्थिक से संबंधित पुस्तकें, पत्रिकाएं, लेख, पर्यटन आलेख, इंटरनेट, इस क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों एवं व्यक्तिगत लोगों से संपर्क आदि है इनके आधार पर तत्कालीन सामाजिक आर्थिक एवं राजनीति के हर गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाना है। मेरा यह शोध कार्य विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति का होगा।

A. संभावित अध्यायीकरण

परिचय

- **प्रथम अध्याय - भौगोलिक पृष्ठभूमि**
- **द्वितीय अध्याय - जनजातीय जनसंख्या स्वरूप**
- **तृतीय अध्याय - जनजातियों के विकास स्तर का मापन**
- **चतुर्थ अध्याय - जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विषमताओं के कारक**
- **पंचम अध्याय - विकास स्तर में क्षेत्रीय विषमता,समस्या एवं संभावनाएं।**
- **षष्टम अध्याय - जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका।**
- **सप्तम अध्याय - जनजातीय समुदाय के विकास हेतु संचालित सरकारी योजनाएं एवं उसके पड़ने वाले प्रभाव।**

निष्कर्ष

संदर्भ

परिशिष्ट

8. आँकड़ो के श्रोत तथा आँकड़ा संग्रह में उपयोग किये जाने वाले उपकरण

अध्ययन की इकाई

इस शोध कार्य के लिए गिरिडीह जिले के सभी प्रखंडों के गांवों को अध्ययन इकाई बनाया जाएगा जहां की जनजातीय लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों का आकलन कर प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों के सहारे गिरिडीह जिला के 2 जनजातीय बहुल प्रखंडों से 4-4 जनजातीय बहुल गांवों का चयन होगा।

सूचना दाता का चयन

शोध कार्य के लिए सूचना दाता के रूप में गांव के प्रमुख लोग जैसे मुखिया, सरपंच, प्रमुख धार्मिक एवं सामाजिक लोगों के साथ-साथ जिला के जनजातीय विकास मंत्रालय ग्रामीण उद्योग बोर्ड कुटीर उद्योग बोर्ड के सभी कर्मी गिरिडीह जिले के पदाधिकारी एवं जिले में स्थित अर्बन हार्ट के प्रबंधक का चयन किया जाएगा।

प्रतिदर्श आकार

शोध कार्य के लिए शोधकर्ता द्वारा जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास से संबंधित सर्वेक्षण के लिए गिरिडीह जिला के प्रखंडों के चयनित गांवों में प्रतिदर्श आकार के रूप में 30-30 परिवार का चयन किया जाएगा।

झारखंड राज्य के गिरिडीह जिले में कुल 13 प्रखंड है जिसका मुख्यालय गिरिडीह जिला है इन जिले में कुल प्रखंडों की संख्या इस प्रकार है:

गिरिडीह, बेंगाबाद, गाण्डे, पीरटांड़, डुमरी, सरिया, बगोदर, बिरनी, धनवार, जमुआ, देवरी, तीसरी और गांवा। शोध से संबंधित आंकड़ों के लिए मैंने सभी प्रखंडों को लिया है।

क्रियाविधि

प्रस्तुत अध्ययन के क्रम में जिस विधि तंत्रों का उपयोग किया जाएगा उनको भूगोलविदों ने दो वर्गों में वर्गीकृत किया है जिसके आधार पर तथ्यों को वैज्ञानिक विश्लेषण एवं गहन व्याख्या प्रस्तुत किया जाना है।

1. **आंकड़ा संकलन विधि**

   भूगोलविदों के अनुसार आंकड़ा संकलन विधि के अंतर्गत अवलोकन, साक्षात्कार, जांच पत्र जैसी विधियों को प्रयोग में लाया जाएगा। जांच पत्र के अंतर्गत प्रश्नावली तथा अनुसूची को शामिल किया जाएगा।

2. **आंकड़ा विश्लेषण एवं व्याख्या / प्रस्तुतीकरण विधि**

   आंकड़ों का विश्लेषण व्याख्या / प्रस्तुतीकरण हेतु भूगोलविदों के निर्देशानुसार आरेखों, तालिकाओं, आलेखों एवं मानचित्रो आदि का उपयोग में लाया जाएगा। वर्तमान आधुनिक शोध जगत में इन सभी के सहारे स्थानिक एवं कालिक भिन्नताओं को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जाएगा।

9. आंकड़ा विश्लेषण

आंकड़ा प्रसंस्करण और विश्लेषण हेतु परिमापन विधि, परीक्षण विधि, मानचित्रण विधि एवं छायाचित्र विधि का प्रयोग किया जाएगा। आंकड़ों का विश्लेषण तालिकाबाद रूप से किया जाएगा तथा आरेखीय विधियों को भी प्रयोग में लाया जाएगा । तथा एस एस पी एम के माध्यम से आंकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा।

किसी भी शोध में शोधार्थी को वस्तुनिष्ठ विधि अनिवार्यता अपनाना चाहिए इसका संपूर्ण ध्यान रखा जाएगा।

10. अध्ययन का महत्व

जनजाति समुदाय हमारे देश के संवैधानिक शब्दावली में कमजोर एवं वंचित समूहों में रखा गया है। इस श्रेणी को संविधान के अंतर्गत उल्लेख किया गया है इसीलिए इसे अनुसूचित कहा जाता है। भारत में जनजातियों की कुल जनसंख्या लगभग 10.46 करोड़ है। 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल आबादी का 8.6% है।

भारत में लगभग 700 आदिम जनजाति को अनुसूचित जनजातियों के श्रेणी में दर्जा प्राप्त है। यह समुदाय अधिकांशतः ग्रामीण एवं सुदूर पहाड़ी क्षेत्र में जीवन यापन करने के लिए बाध्य है तथा भारतीय समाज की प्रगति की मुख्यधारा से वंचित है परंतु उसके सामाजिक और आर्थिक सुधार हेतु केंद्रीय एवं राज्य सरकारें अधिक सक्रिय एवं संवेदनशील हो

चुकी है। इन जातियों का मुख्य पेसा व आर्थिक क्रियाकलाप कृषि एवं पशुपालन है तथा प्रत्येक जनजाति के भिन्न संस्कृति पाए जाते हैं। भारत के विकास में जनजातियों का महत्व कम थी परंतु भारत के आजादी के बाद इसका योगदान अग्रसर है। किसी भी राष्ट्र का विकास में एकरूपता अति आवश्यक है।

प्रस्तावित अध्ययन गिरिडीह क्षेत्र के जनजातियों के सामाजिक आर्थिक विकास के परिपेक्ष में विश्लेषण का प्रयास है। गिरिडीह जिले के तहत 13 प्रखंड आते हैं। गिरिडीह, बेंगाबाद, पीरटांड़, डुमरी, बगोदर, सरिया, बिरनी, धनवार, जमुआ, देवरी, तीसरी, गांवा एवं गाण्डे इन क्षेत्रों में जनजातियों की जनसंख्या का वितरण असमान पाई जाती है।

गिरिडीह जिले में 24 जनजातियां प्रमुख जनजातियों की श्रेणी में आती है जबकि 8 (बिरहोर, कोरबा, असुर, पहाड़िया, वीरजिया, सौरैया पहाड़िया, माल पहाड़िया तथा सबर) को आदिम जनजाति किस श्रेणी में रखा गया है। जनसंख्या के दृष्टि से प्रथम स्थान पर संथाल दूसरे स्थान पर उरांव तीसरे स्थान पर मुंडा तथा चौथे स्थान पर हो जनजाति पाए जाते हैं। प्रत्येक जनजाति के अपने-अपने धार्मिक कर्मकांड सामाजिक आचार-विचार एवं वेशभूषा पाए जाते हैं। कृषि इन जनजातियों के अर्थव्यवस्था का मूलाधार है। यहां की कृषि मानसून पर आधारित है अतः मानसून के बाद कृषि कार्य नहीं हो पाता साथ ही संपूर्ण झारखंड के क्षेत्र के समान उत्तरी छोटानागपुर की गिरिडीह जिले की भूमि पठारी और कम उपजाऊ है इसीलिए जीविका परिजन के अन्य साधन जैसे वनोत्पाद संग्रह, शिल्पकार, पशु पालन, शिकार करना और मजदूरी को भी अपनाया है तथा इसके माध्यम से राज्य के अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मेरे इस शोध कार्य से अध्ययन क्षेत्र गिरिडीह जिला के जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विकास की जानकारी जनसंख्याविधो, योजनाकर्ताओं, शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होगा तथा मानव हित के लिए उन्हें जनजातीय विकास से संबंधित जानकारी प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा।

11. वर्तमान समय की समस्या तथा समाज की आवश्यकता हेतु इसकी प्रासंगिकता

गिरिडीह जिले के आदिवासियों की जो समस्याएं है उन्हें उजागर करना उनके जीवन को उचित समन्वय के साथ किस तरह से विकसित किया जा सकता है इस पर प्रस्तुत अध्याय प्रकाश डालता है। यह अध्ययन जनजातीय विकास से जुड़े अधिकारियों, नीति निर्माताओं के कार्यों को सरल बना सकता है।

भारत के संविधान में अनुसूचित जनजातियों के विशेष जरूरतों को समझते हुए संविधान निर्माताओं ने जनजातियों के हितों की रक्षा हेतु कुछ खास प्रावधान किए हैं। इन प्रावधानों का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक न्याय सुनिश्चित करने के अलावा इस समुदाय को शोषण से बचाना भी है। नागरिकों के मौलिक अधिकार उनका समग्र विकास सुनिश्चित करते हैं। भारत में विभिन्न पंचवर्षीय और सालाना योजनाओं में जनजातियों के विकास पर जोर दिया गया है लेकिन देश की अनुसूचित जनजातियों के विकास के मार्ग में चुनौतियां अब भी मौजूद है। इसका मुख्य कारण इस समुदाय की पारंपरिक जीवनशैली दूरदराज के इलाकों में बसावट बिखरी हुई आबादी और निरंतर विस्थापन है।

वर्तमान समय में भारत सरकार ने योजनाबद्ध तरीकों से अनुसूचित जनजातियों के नागरिकों के समग्र विकास को गति प्रदान की है परंतु इन प्रयासों के बावजूद अनुसूचित जातियों के विकास में बाधाएं आ रहे हैं इसके लिए अनुसूचित जनजातियों की समस्याओं की पहचान करने के अलावा विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पहलकदमों के जरिए इनके निवारण का रास्ता भी तैयार करने की आवश्यकता है ताकि भागीदारी पर आधारित और जनजाति प्रबंधित विकास प्रक्रिया से अनुसूचित जनजातियों का सशक्तिकरण संभव हो सके तथा परिवर्तनशील और प्रतिस्पर्धा दुनिया में किस तरह आधुनिक और आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन के जरिए अनुसूचित जनजातियों की अगली पीढ़ी की दक्षता और ज्ञान को बढ़ाया जाए।

12. **वर्तमान ज्ञान में योगदान**

वर्तमान परिपेक्ष में हम देखते हैं कि गिरिडीह जिले के जनजाति (आदिवासी) सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से काफी पिछड़े हुए हैं। आदिवासी समाज में जागरूकता का काफी अभाव है जिसके कारण सरकार द्वारा आदिवासियों के लिए बनाई गई कई सारी योजनाएं उन तक पहुंच ही नहीं पाती है, और उनकी स्थिति अन्य वर्गों की तुलना में बेहतर ही नहीं हो पाती है। आदिवासियों की स्थिति बेहतर ना होने के पीछे कई सारे कारक जिम्मेवार हैं। भविष्य में निर्धारित कार्य के अंतर्गत इन कारकों का पता लगाकर साथ ही साथ आदिवासियों में जागरूकता को बढ़ाकर उनकी स्थिति को बेहतर किया जा सकता है। जिससे भविष्य में उनके विकास की अपार संभावनाएं बनती है।

13. भविष्य के कार्य

इस शोध के माध्यम से भविष्य में निम्नलिखित क्षेत्रों में शोध कार्य किए जा सकेंगे:-

- जनजातियों के सामाजिक विकास के क्षेत्र में।
- जनजातियों के आर्थिक विकास के क्षेत्र में।
- जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक विषमताओं के क्षेत्र में।
- जनजातियों के अलावा अन्य समुदायों के सामाजिक-आर्थिक के क्षेत्र में।
- जनजातीय समुदायों के विकास में तुलनात्मक अध्ययन के क्षेत्र में।

15. संबंधित संदर्भ

अहमद, सैयद नौशाद 2004 - "जियोग्राफी ऑफ सोशियो इकोनामिक डिस्पर्टीज ऑफ झारखंड" नई दिल्ली, ओथर प्रेस, पृ. स. 113.

एम. वानखेंड़े, दीपक 2008 - "सशियो इकोनामिक डेवलपमेंट आफ शेड्यूल्ड कास्ट" दिल्ली, गौतम बुक सेंटर, पृ. स. 360.

मिली, पुलक & पेगु, अनंता 2018 - "सशियो इकोनामिक डेवलपमेंट आफ नॉर्थ ईस्ट इंडिया" दरियागंज, न्यू दिल्ली, मिताली पब्लिकेशन पृ. स. 109.

अब्राहम, मैथ्यू 2019 - "डेवलपमेंट ऑफ ट्राइबल सोसाइटी" राजौरी गार्डन, दिल्ली, पेरिओट्स पब्लिकेशन पृ. स. 81.

तिवारी, रामकुमार 2019 - "झारखंड का भूगोल" प्रेमचंद मार्ग, राजेंद्र नगर, पटना, बिहार, हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ. स. 204.

त्रिपाठी के के, सितंबर 2022 – कुरुक्षेत्र पत्रिका- "भारत में जनजातीय विकास की रणनीतियां" पृ. स. 5 से 10.

गुप्ता यू सी, & गुप्ता, डॉ मंजू 2015 - "आर्थिक एवं सामाजिक विकास के विविध आयाम" "जनजातियों का सामाजिक आर्थिक उत्थान" अंसारी रोड नई दिल्ली, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, पृ. स. 383 से 392.

मेंज, दिवाकर & हंसदा, डेलो मइ 2010 - "इनसाइक्लोपीडिया ऑफ शेड्यूल्ड ट्राइब ऑफ झारखंड" नई दिल्ली, कल्पाज पब्लिकेशन, पृ. स. 7 से 10.

त्रिपाठी, प्रो. मधुसुधन & त्रिपाठी, पतंजलि 2016 – "भारत में अनुसूचित जाति जनजाति (सामाजिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य)" दरियागंज नई दिल्ली, ओमेगा पब्लिकेशन, पृ. स. 162.

सिंह, जयंत प्रताप 2016 – "अनुसूचित जातियों के सामाजिक आर्थिक विकास का भौगोलिक विश्लेषण (जनपद जालौन उ. प्रदेश)" नई सड़क दिल्ली, निधि बुक सेंटर, पृ. स.58.

लॉ, विमला चूरण 2017 – "एमसेंट इंडियन ट्राइब्स" एंडीसाइट प्रेस पृ. स. 36.

यादव चंद्रभान (2011) कुरुक्षेत्र पत्रिका, ग्रामीण क्षेत्र एवं रोजगार मंत्रालय

Jharkhand census https://www.censusindia.co.in/state/jharkhand

Jharkhand government. http://jharkhandminerals.gov.in

Answer shakeel (2018) a brief account on the cottage industries in India http://www.jagranjosh.com

MSME	MSME (micro small and medium enterprises) Development Institute ranchi. www.msmeranchi.nic.in
Jharkhand industrial and investment promotion policy pdf (2016)	http://momentumjharkhand.com
Ministry of tribal affairs Government of India	https://tribal.nic.in/
Jharkhand tribal development Plan IPE – Global pdf (2013)	https://jalshakti-ddws.gov.in
Tribal Co-Operative Marketing Development Federation of India Limited Ministry of Tribal Affairs, Govt. of India	https://trifed.tribal.gov.in/Jharkhand